गांधी-मार्ग

जुलाई-अगस्त 2024

अंतिम आशा !

महात्मा गांधी ० कुमार साहनी ० अरुण डिके ० स्वाति देसाई ० जोआना स्लेटर

गांधी-मार्ग

अहिंसा-संस्कृति का द्वैमासिक
वर्ष 66, अंक 4, जुलाई-अगस्त 2024

गांधी शांति प्रतिष्ठान

1.	**अंतिम आशा :** आग में बदलती गर्मी	राजकुमार सिन्हा	9
2.	**साहित्य :** हे सौम्य, श्रद्धा रखो!	विनोबा	24
3.	**किसानी :** तीन गोलियों से छलनी...	अरुण डिके	31
4.	**चंपारण :** अहिंसक क्रांति का विज्ञान	स्नेह लता	35
5.	**प्रयोग :** क्या आप डॉल्फिन साहब...	जोआना स्लेटर	43
6.	**नजरिया :** असहिष्णुता, भय और हिंसा	कुमार शहानी	49
7.	**स्मृति-शेष :** प्रिय दोस्त को अलविदा	स्वाति देसाई	54
9.	टिप्पणियां		60
10.	पत्र		64

आवरण : अंतिम आशा! : सागर को चीरते जहाज में अपना कैमरा संभाल कर बैठे इंग्लैंड के शौकिया फोटोग्राफर **नीमा सारीखानी** को, घने कुहरे में, लंबी खोज के बाद अचानक ही दो ध्रुवीय भालू, मध्य रात्रि में दिखाई दिए. नीमा ने चाहा कि उनका जहाज उनके अधिक निकट पहुंचे लेकिन उन दो भालुओं में जो छोटा था, वह जल्दी से, सागर में तैरते-पिघलते इस हिमखंड के ऊपर चढ़कर सो गया. तेजी से गर्म होते पर्यावरण में इन हिम भालुओं का अस्तित्व खतरे में है. ऐसे हिमखंड अब उनकी अंतिम आशा हैं. वन्य जीवन की वार्षिक फोटोग्राफी प्रतियोगिता में 95 देशों से 49,957 फोटोग्राफ्स आए थे. नीमा का यह फोटो 2024 वर्ष का सर्वश्रेष्ठ फोटो मान कर पुरस्कृत किया गया.

आवरण-सज्जा हमेशा की तरह **कीर्ति** ने की है.

वार्षिक शुल्क : भारत में 200 रुपये, दो वर्ष के 350 रुपये, आजीवन-1000 रुपये (व्यक्तिगत), 2000 रुपये (संस्थागत), एक प्रति का मूल्य 20 रुपये, डाक खर्च निःशुल्क. दो माह तक न मिलने पर शिकायत लिखें. अपना शुल्क चेक, बैंक ड्राफ्ट, मनीऑर्डर द्वारा 'गांधी शांति प्रतिष्ठान' के नाम भेजें. ऑनलाइन भुगतान के लिए केनरा बैंक खाता नं. 0158101030392 IFSC CODE : CNRB 0000158.

संपादन : कुमार प्रशांत **प्रबंध :** मनोज कुमार झा **प्रसार :** भगवान सिंह

गांधी शांति प्रतिष्ठान, 223 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 के लिए अशोक कुमार द्वारा प्रकाशित

फोन : 011-2323 7491, 2323 7493, **Email:** gmhindi@gmail.com

मुद्रक : नीता प्रेस, 3574- गली जटवारा, नियर सबलोक क्लीनिक, दरियागंज, दिल्ली-110002, फोन नं. 8800646548

शुरू में...

निजी महत्वाकांक्षा, विषैले दर्शन तथा झूठी हेकड़ी के घातक मेल से बनी मोदी सरकार की फासिज्म की तरफ 10 सालों से चल रही अंधी दौड़ को रोकने, संसदीय लोकतंत्र को संवैधानिक पटरी पर लौटा लाने तथा देश को खुली हवा में सांस लेने का मौका देने लिए 2024 का वर्ष अंतिम आशा था. कोई 77 साल का हमारा संसदीय लोकतंत्र पहली बार ऐसे संकट में आया हो, ऐसा नहीं है. हम यह क्यों भूल जाएं कि हमारी आजादी शर्मनाक देश-विभाजन व सांप्रदायिक खूंरेजी के दारुण संकट में से ही पैदा हुई थी? और उस वक्त भी दूसरी कोई नहीं, यही सांप्रदायिक ताकतें थीं जिन्होंने आजादी की सूरत इतनी डरावनी बना दी थी. गांधी की हत्या ने उस संकट को और भी गहरा कर दिया था. लेकिन तब जवाहरलाल थे; और थे सरदार-मौलाना-राजेन बाबू आदि, तो संकट का वह दौर देश पार कर सका. ये लोग न होते और भारत की जनता पागल होने के कगार से वापस न लौटी होती तो एशिया को दो पाकिस्तानों की त्रासदी झेलनी पड़ती.

हम यह भी क्यों भूल जाएं कि इन ताकतों ने एक नहीं, अनेक बार अपना सिर उठाने की कोशिश की लेकिन तब भारतीय समाज में व शासन में इतनी ताकत थी कि वह ऐसे प्रयासों को विफल करती रही. फिर यह भी हुआ कि शासन के भीतर से ही लोकतंत्र पर हमला हुआ. लोकतंत्र का हाल कुछ ऐसा ही है. वह तब तक बहुत प्यारा लगता है जब तक दूसरों पर लागू होता है; जैसे ही वह अपने पर लागू होने लगता है, सभी बिफर जाते हैं व लोकतंत्र को बोझ मान कर, उठाकर फेंकने लगते हैं. 1974 में ऐसा ही हुआ. इंदिरा गांधी को लगा कि जो मुझसे सवाल पूछे वैसा लोकतंत्र मुझे नहीं चाहिए. जयप्रकाश ने समझायाः लोकतंत्र तुमसे-मुझसे कहीं बड़ी अवधारणा है. तुम्हें कैसा लोकतंत्र चाहिए, इससे देश को क्या मतलब? देश को कैसा लोकतंत्र चाहिए, तुम्हें इसकी फिक्र होनी चाहिए. देश को कैसा लोकतंत्र चाहिए, इसकी परिपूर्ण तस्वीर 'हम भारत के लोग' संविधान में आंक कर तुमको दे चुके हैं.

इंदिराजी ने न जयप्रकाश को सुना, न उस संविधान को पढ़ा जिसके मुताबिक हमारी सरकारों को चलना था, और चलना है. उन्होंने जयप्रकाश समेत ऐसे सवाल पूछने वालों पर व लोकतंत्र पर घातक हमला किया. देश ने जयप्रकाश के नेतृत्व में संपूर्ण क्रांति आंदोलन से उसका मुकाबला किया. मुकाबला लंबा चला. अंततः आपातकाल की तोप चलाकर इंदिराजी ने अपनी जनता को झुकाना चाहा. सारा देश 19 माह लंबी जेल में

डाल दिया गया. जिस देश की आजादी के लिए जयप्रकाश सरीखे लोगों ने जेल काटी थी, वे सब अपने ही आजाद भारत की जेलों में बंद कर दिए गए. जानकार बताते हैं कि सन् 42 के भारत छोड़ो आंदोलन में जितने लोग जेलों में नहीं डाले गए थे, 1975 में उससे अधिक लोग जेलों में डाले गए. फिर लोकतंत्र जेल से बाहर आया, तो इंदिराजी की धज्जियां उड़ गईं. दुनिया ने यह नजारा पहली बार देखा कि वोट ने तानाशाही को परास्त कर दिया.

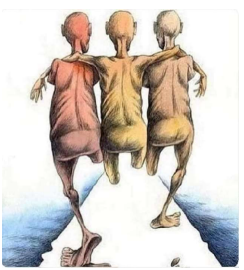

2024 में वोट ने फिर वही किया. लोकतंत्र जिनके लिए गणित का खेल है, वे विमूढ़ हिसाब लगाते रह गए कि कितनी सीटें कम हुईं; कि कितना फीसदी वोट कम हुआ. लेकिन ऐसे लोग भूल जाते हैं कि लोकतंत्र यदि कोई खेल है तो वह गणित का शुष्क खेल नहीं, जीवंत माहौल बनाने का खेल है. तो माहौल ऐसा बना कि गणित से जीतने वाला 'हार' गया; गणित से हारने वाला 'जीत' गया! पूर्ण बहुमत की मोदी सरकार लंगड़ी व बला के अल्पमत की सरकार में बदल गई.

नयी सरकार के शिखर पर बैठा आदमी वही है लेकिन उसके पास अब न 'संख्या का बुलडोजर' है, न 'सर्वस्वीकृति वाला इकबाल' है. वह कवच-कुंडल विहीन ऐसी 'ईश्वरीय रचना' है, जिसका देवता झोला उठाकर निकल गया है. ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि वह इस अल्पमत की सरकार को अल्पसंख्यकों, अल्प-अवसर प्राप्त वर्गों, अल्प-प्रतिष्ठा व अल्प-सुरक्षा प्राप्त महिलाओं, अल्प-सामर्थ्यवान बच्चों का सहारा बनने की समझ व दृष्टि दे.

चुनाव नतीजों का पूर्वानुमान करने का धंधा - एक्जिट पोल - अब प्रतिबंधित कर दिया जाना चाहिए. यह न कला है, न विज्ञान! यह बाजार का नया धंधा है जिसे प्रतिष्ठित कर, भरपूर कमाई करने में कितने ही 'किशोर' लगे हैं. यह राजनीति का धंधा करने वालों की असीमित भूख को हथियार बनाकर, लोकतंत्र से बलात्कार करने वाली नयी बाजारू ताकत है. हर चुनाव समाज की जमीन में नये बीज बोने और उनके अंकुरण की साधना है.

किसी ने बहुत खूब कहा कि 4 जून 2024 के चुनाव परिणाम से, लोकतंत्र की हवा में ऑक्सीजन की मात्रा थोड़ी बढ़ गई है. हवा में ऑक्सीजन पर्याप्त हो तो जीवित संरचनाएं सांस खींच पाती हैं. ऐसा ही लोकतंत्र के साथ भी है. संसद जब संविधान के दायरे में रहती है, संवैधानिक संरचनाएं जब स्वतंत्रतापूर्वक अपनी-अपनी जिम्मेवारियों का निर्वहन करती हैं, तब लोकतंत्र सांस ले पाता है. जब ऐसा नहीं होता है तब अस्पताल चाहे जितना आधुनिक और 'फाइवस्टार'